385/22/1/16

शोध विषय: हिन्दी ब्लॉग का समाजशास्त्रीय विश्लेषण
शोधार्थी : निशा सिंह
शोध निर्देशक : डॉ. जी. आर. सैयद
ए.जे.के. मासकम्यूनिकेशन एण्ड रिसर्च सेन्टर,
जमिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

शोधसार (Abstract)

प्रकृत शोध प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभक्त है। इसका प्रथम अध्याय ब्लॉग के नामकरण, इतिहास एवं अवधारणा को स्पष्ट करते हुए ब्लॉग के क्षेत्र एवं विषयों की व्यापकता का विवेचन करता है। द्वितीय अध्याय ब्लॉग के समाज शास्त्रीय अध्ययन पद्धति को परिभाषित करते हुए हाशिये के समाजों के लिये ब्लॉग की उपयोगिता को स्पष्ट करता है। तृतीय अध्याय मुख्य धारा की पत्रकारिता के समानान्तर ब्लॉग के क्षेत्र एवं विषयों का विवेचन एवं ब्लॉग की कमजोरियों को बताता है। चतुर्थ अध्याय सर्वे के आँकड़ों के निष्कर्षों के आधार पर ब्लॉग के पाठक वर्ग तथा उसकी उपयोगिता एवं पहुँच का विवेचन करता है। अध्याय पाँच ब्लॉग की वर्तमान स्थिति को स्पष्ट करते हुए ब्लॉग की कमजोरियों, चुनौतियों एवं भविष्य में ब्लॉग की सम्भावनाओं का विवेचन करता है।

निष्कर्ष (Findings):-

ब्लॉग्स के माध्यम से अलग-अलग विषयों को लोगों तक पहुचाने की कोशिश की जा रही हैं। अत: कहने का तात्पर्य यह है कि आज हर क्षेत्र के ब्लॉगर्स न केवल अपने क्षेत्र के बारे में लिख-पढ़ रहे हैं बल्कि अन्य क्षेत्रों के बारे में जानकारियां प्राप्त करते हैं तथा उन पर अपने आवश्यक सुझाव भी देते हैं। यानि ब्लॉग एक ऐसी चौपाल बनता जा रहा है जहां हर समुदाय के लोग आकर चिन्तन-मनन, राय मशविरा करते हैं। ब्लॉग मीडिया के आने से एक महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहा है। अब तक दलित, आदिवासी, स्त्री, अल्पसंख्यक आदि ऐसे समाज रहे हैं जिन्हे सदियों से परिधि के बाहर रखा गया है। दिलचस्प यह है कि इन्ही की संख्या सबसे अधिक है। ब्लॉग चूंकि एक ऐसा स्वतंत्र मंच है जहां कोई भी, कभी भी, बिना किसी मूल्य के और पाबंदी के अपनी बात रख सकता है एवं दूसरों की बात को जान-पढ़ सकता है।

सारांश (Conclusion) :-

ब्लॉग एक ऐसा माध्यम बनकर उभरा है। जिस पर लगभग सभी क्षेत्रों के लोग सक्रिय हैं। चूंकि यह ऐसा मंच है। जिस पर सभी को समान रूप से अभिव्यक्ति की आजादी है। मामूली इन्टरनेट की जानकार गृहणी से लेकर डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, फिल्म-टी.वी के अभिनेता-कलाकार, राजनेता, अर्थशास्त्री, समाज-सुधारक, धर्म-प्रचारक, शिक्षक, उद्योगपति तक लगभग सभी वर्गों एवं क्षेत्रों के लोग आज ब्लॉगिंग कर रहे

हैं। कुछ ऐसी नारी ब्लॉगर्स हैं जिन्होने ऐसे ब्लॉग्स का निर्माण किया है जहां किसी भी क्षेत्र की महिला को अपने जीवन के अनुभवों, घटनाओं को सांझा करने का अधिकार है। खेल-जगत से लेकर फिल्मी जगत और राजनीति से लेकर समाज-सुधार व धार्मिक जगत तक की खबरें आज ब्लॉग पर देखी जा सकती हैं। तकनीकी, विज्ञान, साहित्य, संस्कृति, कला, बाल-मनोवृत्ति, आदि विभिन्न विषयों को लेकर अलग-अलग ब्लॉग्स का निर्माण किया जा रहा हैं।

अनुशंसा एवं क्रियान्वयन (Recommendation and Implementation) :-

ब्लॉग की तरफ धीरे-धीरे लोगों का झुकाव बढ़ता जा रहा है। कुछ विश्वविद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों में भी ब्लॉग को पढ़ाया जाने लगा है। शोधार्थी, शिक्षक, विद्यार्थीगण, साहित्यकार आदि लोग ब्लॉग से अपने उपयोग की सामग्री प्राप्त कर रहे हैं। ब्लॉग को लेकर किये गये सर्वे के दौरान अच्छे आंकड़े प्राप्त हुए हैं।

आज ब्लॉग अपनी विकासशील अवस्था में है। ऐसे में उसके सामने बहुत सारी चुनौतियां हैं जिनको दूर किया जाये तो भविष्य में ब्लॉग की असीम संभावनाएं नजर आती हैं। तकनीकी ज्ञान का अभाव, इन्टरनेट की कम उपलब्धता, सर्वमान्य फाण्ट की समस्या, कम्प्यूटर, लैपटाप, आदि का मंहगा होना, ब्लॉग पर अमर्यादित एवं आपत्तिजनक सामग्री का पोस्ट होना, सामग्री की प्रामाणिकता व विश्वसनीयता, आय के स्त्रोत की कमी आदि ऐसी चुनौतियां एवं कमियां हैं जो ब्लॉग के विकास में बाधा है। इन खामियों को ब्लॉगर्स विद्वान भविष्य में समाप्त कर देते हैं तो ब्लॉग निश्चित रूप से प्रसिद्ध जन मीडिया के रूप में पहचाना जाएगा। एक वैकल्पिक पत्रकारिता के सभी गुण अंगीकार कर पायेगा। इसके पाठकों की संख्या में लगातार इजाफा होता चला जाएगा। हाशिए की आवाज बनकर यह उनकी वाणी को अभिव्यक्ति देगा। मुख्यधारा के मीडिया की खामियों को दूर कर मीडिया को और मजबूती प्रदान करेगा। मीडिया के उद्देश्य लोकतंत्र की रक्षा और जन-सरोकारों को और अधिक स्पष्ट कर सकेगा।

अब ब्लॉग का एक दशक का सफरनामा बीत चुका है और इस एक दशक में इसने अपना काफी विस्तार किया है, लेकिन अभी इसे और विस्तार पाना है। आशा है कि यह माध्यम अपनी खामियों को दूर कर भविष्य में अपनी स्पष्ट पहचान बनाने में सफल होगा।